(E - 102)
जयवंतो जिनबिंब जगतमें

(मेरी भावना-राग)

जयवंतो जिनबिंब जगतमें,
जिन देखत निज पाया है; जयवंतो० टेक.

वीतरागता लखि प्रभुजीकी,
विषयदाह विनशाया है;
प्रगट भयो संतोष महागुण,
मन थिरतामें आया है। जयवंतो० १

अतिशय ज्ञान शरासनपै धरि,
शुक्लध्यान शर बाया है;
हानि मोह अरि चंड चौकडी,
ज्ञानादिक उपजाया है। जयवंतो० २

वसुविधि अरि हरिकर शिवथानक,
थिरस्वरूप ठहराया है;
सो स्वरूप रुचि स्वयंसिद्ध प्रभु,
ज्ञानरूप मन भाया है। जयवंतो० ३

यदपि अचेत तदपि चेतनको,
चितस्वरूप दिखलाया है;
कृत्यकृत्य 'जिनेश्वर' प्रतिमा,
पूजनीय गुरु गाया है। जयवंतो० ४